इतिहास में पांडुलिपियों का विकास (1st Century से आज तक)

Preeti sahu

How to Cite this Article:

sahu, P. (2026). इतिहास में पांडुलिपियों का विकास (1st Century से आज तक). International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, 02(6). https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i6.337

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited.

© The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.

https://doi.org/ 10.55041/ijcope.v2i6.337

मानव सभ्यता की प्रगति में पांडुलिपियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। पांडुलिपि का अर्थ है हाथ से लिखी पुस्तक या ग्रंथ। छपाई की तकनीक आने से पहले सभी धार्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक ज्ञान पत्तों, ताड़पत्रों, भोजपत्रों, चमड़े अथवा कपड़े पर हस्तलिखित रूप में सुरक्षित किया जाता था। भारत में पांडुलिपि परंपरा प्रथम शताब्दी ईस्वी से लेकर आधुनिक काल तक लगातार विकसित होती रही।

1. प्राचीन काल (1st से 6th Century)

प्रथम शताब्दी से ही भारत में वेद, उपनिषद, स्मृति और आयुर्वेद जैसे ग्रंथ लिखे गए। ये अधिकतर संस्कृत भाषा में और ब्राह्मी तथा बाद में गुप्त लिपि में मिलते हैं। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता (आयुर्वेद पर) भी इसी समय लिखी और संरक्षित की गईं। ताड़पत्रों और भोजपत्रों पर लिखी गई इन पांडुलिपियों ने भारतीय चिकित्सा, दर्शन और धर्म को सुरक्षित रखा।

2. गुप्तकाल और प्रारंभिक मध्यकाल (4th से 12th Century)

गुप्त काल में साहित्यिक और धार्मिक पांडुलिपियों की भरमार रही। कालिदास की रचनाएँ जैसे अभिज्ञान शाकुंतलम् पांडुलिपि परंपरा से संरक्षित हुईं।

11वीं शताब्दी में अलबरूनी ने अरबी भाषा में "किताब-उल-हिंद" लिखी, जिसमें भारत की संस्कृति और विज्ञान का विस्तृत विवरण मिलता है।

12वीं शताब्दी में काल्हण की "राजतरंगिणी" (शारदा लिपि, संस्कृत भाषा में) भारत का पहला प्रामाणिक क्षेत्रीय इतिहास मानी जाती है।

3. मध्यकाल (13th से 17th Century)

मध्यकाल में फ़ारसी और संस्कृत दोनों भाषाओं में पांडुलिपियाँ लिखी गईं।

14वीं शताब्दी में ज़ियाउद्दीन बरनी ने फ़ारसी में "तारीख-ए-फ़िरोज़शाही" लिखी।

16वीं शताब्दी में तुलसीदास ने अवधी भाषा और नागरी लिपि में "रामचरितमानस" रचा, जो पांडुलिपि रूप में ही सुरक्षित हुआ।

मुग़ल काल में अबुल फज़ल द्वारा लिखित “आइन-ए-अकबरी” और “अकबरनामा” फ़ारसी पांडुलिपियों के रूप में प्रसिद्ध हुईं।

इसी समय भक्ति और सूफ़ी संतों की कविताएँ भी हस्तलिखित रूप में संरक्षित की गईं।

4. आधुनिक काल (18th से 19th Century)

18वीं शताब्दी तक भारत में लाखों पांडुलिपियाँ तैयार हो चुकी थीं। ये विभिन्न मंदिरों, मठों और राजदरबारों में रखी गईं। मुद्रण कला के आगमन के बाद पांडुलिपियों का महत्व कम होने लगा, किंतु तब तक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फ़ारसी और भारतीय भाषाओं की अमूल्य धरोहर सुरक्षित हो चुकी थी।

5. समकालीन समय (20th से 21st Century)

आज पांडुलिपियों को डिजिटल रूप में सुरक्षित किया जा रहा है। भारत सरकार ने भारतीय पांडुलिपि मिशन (National Mission for Manuscripts) शुरू किया है, जिसके अंतर्गत लाखों पांडुलिपियाँ संरक्षित की जा रही हैं। इससे हमें प्राचीन ज्ञान विज्ञान, साहित्य और इतिहास तक पहुँचने का अवसर मिल रहा है।

निष्कर्ष

1st Century से लेकर आज तक लिखी गई पांडुलिपियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत धरोहर हैं। वेदों और चिकित्सा ग्रंथों से लेकर रामचरितमानस और आइन-ए-अकबरी तक, हर युग की पांडुलिपियाँ उस समय के समाज, संस्कृति, धर्म और राजनीति की झलक देती हैं। आधुनिक तकनीक ने इन्हें अमर बना दिया है ताकि भावी पीढ़ियाँ भी इस अनमोल धरोहर से लाभान्वित हो सकें।